विद्या

गोविन्द-तड़के उठलन आउ अप्पन चस्मा घरनी से माँगलन। तबतक धोती-कुर्ता पहिन के गोविन्द तइयार हो रहलन हल। झट से पैर में जूता लगौलन आउ हाथ में छड़ी उठौते हलन कि घरनी चस्मा ला के देलथिन।

'आज भरथपुर जा रहली हे। घर-दुआर के बढ़िया से सम्भालिहऽ। हो सकऽ हे हमरा आवे में देर-सबेर हो जाए। लइकन-फइकन पर नजर रखिहऽ!' गोविन्द अप्पन घरनी से कहलन।

हर दिन एक-न-एक गाँव गोविन्द अप्पन कन्या के अनुकूल वर खोजे खातिर निकल जा हलन। बेचारे रात-दिन चिन्ता में डूबल रहथ कि कब अनुकूल वर मइयाँ ला मिले। घर अच्छा मिले तो वर खराब, वर मिले तो घर खराब। घर, वर आउ विद्या के साथ-साथ पढ़ल-लिखल खनदान तो मिलना बड़ कठिन बात हल। दउड़ते-दउड़ते गोविन्द के जूता खिया गेल, पर अनुकूल वर नहियें मिलल। तिलक के सुरसा के समान बढ़ल मुँह में लड़की के बाप हनुमान बनथ तो कइसे?

एक दिन हार के गोविन्द अप्पन चउँकी पर खरहरे सुतल हलन। सोचइत हलन कि का कैल जाए। हम दुल्हा खोजे में तो खिया गेली। सोचते-सोचते मन इस्थिर कैलन आउ फिन डंटा-सोटा उठौलन। झट से जूता पहिरलन आउ आँख पर चस्मा डाल के सोझ हो गेलन गाँव के दक्खिन, चन्दनपुर।

चन्दनपुर गाँव बहुत छोट हे, पर बड़ा रुहचुह लगऽ हे। हिम्मत बाँध के गाँव में गेलन। गाँव में जाके सिरीचन्द के घर पूछलन। सिरीचन्द के तीन बेटा-तीनों के तीनों पढ़ल-लिखल आउ होसियार। लेकिन घर मट्टी के बनल, देवाल में दरार फटल। दलान हे पर चउँकी आउ खटिया नदारत, पोरा बिछावल हे। गोविन्द मूड़ी नेवा के दलान में घुसलन आउ गद्-से पोरा पर अहक के बइठ रहलन।

सिरीचन्द जी अप्पन दरवाजा पर एगो अदमी के बइठल देखलन तब ऊ पूछ बइठलन-'अपने के घर कहाँ हे? अपने का चाहऽ ही?'

गोविन्द कहलन-'हम्मर घर अनाथपुर हे, हम अपनहीं के घरे अइली हे!'

सिरीचन्द जी अप्पन लड़कन के पुकारलन आउ पानी, बिछौना लावे ला

लेखक-परिचय :

नाम : डॉ० दशई सिंह

पिता : देव नारायण सिंह

माता : मूर्त्ति देवी

जनम-तिथि : 2-7-1935

जनम-अस्थान : राधे बिगहा, बेलखरा, अरवल

निवास : दखली घाट, गढ़पर, बिहारशरीफ, नालन्दा

सिच्छा : एम. ए., पी.एच.डी.

पेसा : किसान कॉलेज, सोहसराय, नालन्दा में हिन्दी विभागाध्यच्छ के पद से सेवा-निवृत

डॉ० दशई सिंह के पचासो रचना अलग-अलग मगही आउ हिन्दी पत्र-पत्रिका में छप चुकल हे। सबसे जादे मसहूर भेल इनकर 101 मगही गीत के संकलन 'भक्ति-रसामृत'। मगही में इनकर कई गो निबंध आउ कहानी परकासित हे जेकरा माध्यम से ई समाज के बढ़िया सन्देस देलन हे।

पाठ-परिचय

आज के जुग के अर्थजुग कहल जाहे तइयो विद्या के महत्व भी कम न हे। ई सवाल पर हरमेसे वाद-विवाद होइत रहल हे कि लछमी बड़ हथ कि सरसती। लोग अप्पन-अप्पन तर्क के जरिये लछमी चाहे सरसती के ऊपर आसन पर बइठावे के कोरसिस करइत रहऽ हथ। ई कहानी 'विद्या' में भी एही विवाद सामने आयल हे। कथाकार दशई सिंह ई कहानी के माध्यम से देखावे के कोरसिस कैलन हे कि केकरो पास केतनो धन-दौलत आउ घर-मकान होवे बाकि ऊ कोई विद्वान के बराबरी न कर सकऽ हे। दूसर तरफ जे विद्वान हे, धन-दौलत आउ धनवान लोग ओकरा पीछे-पीछे लगल रहऽ हथ। ठीके कहल गेल हे कि राजा के पूजा ओकर राजे भर में होवऽ हे, जबकि विद्वान के पूजा सउँसे दुनिया में होवऽ हे।

भासा-अध्ययन :

1. एकांकी के तत्त्व के आधार पर 'जुद्ध न होवे' एकांकी के समीच्छा करऽ।
2. एकांकी से पाँच गो मुहाबरा चुनके लिखऽ आउ वाक्य में परयोग करऽ।
3. नीचे लिखल सबद से वाक्य बनावऽ :
   मसुआयल, चउँकइत, बंकर, गोरथारी, सैलूट।
4. नीचे लिखल सबद के उल्टा सबद बतावऽ :
   ससुरार, दुस्मन,सिसकइत, मउकत, तुरत।

योग्यता विस्तार :

1. ई नाटक के रंगमंच पर खेलल जाय।
2. कोई दोसर नाटक भी खेलल जाय जेकरा से समाज के सिच्छा मिले।
3. 'जुद्ध न होवे' एकरा पर एगो परिचर्चा के आयोजन करऽ।

सब्दार्थ :

बीछइत	:	चुनइत
अतत्तह	:	अति करना
गोरथारी	:	पैर के तरफ
मँझान	:	उदास
मसुआयल	:	मुरझायल
सेमाना	:	सीमा
समाद	:	समाचार
पछारी	:	पीछे
कुमुक	:	दल
बंकर	:	जमीन के अन्दर खोद के बनावल गेल छुपे के जगह
वीरगति पयलन	:	जुद्ध में लड़इत मर गेलन
फौज	:	सेना
सैलूट	:	सलाम करना
गियारी	:	गला

[कहते-कहते सन्तू के गियारी भर जाहे, आउ ऊ फफकइत बहादुर के छाती से लटपटा जा हे। दुरगी भी उनका में लटपटा जा हे आउ मन्तुओ तीनो के अकवार में लेके मूड़ी घुसिया देहे।]

(परदा)

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. 'जुद्ध न होवे' एकांकी के पात्र लोग के नाम बतावऽ ?
2. पलटनिया सलामी कइसे देवल जाहे ? सलाम करके देखावऽ ?
3. फोटो पर माला पेन्हावे के का मतलब होवऽ हे ?
4. सन्तू आउ मन्तू बहादुर से कउन चीज के फरमाइस करऽ हे ?
5. फौजी जवान केकरा कहल जाहे ?

लिखित :

1. एकांकी नाटक के परमुख तत्व कउन-कउन हे ?
2. संकलन-त्रय के माने का होवऽ हे ?
3. बहादुर के चरित्र-चित्रन करऽ ।
4. दुरगी के चरित्र-चित्रन करऽ ।
5. 'जुद्ध न होवे' एकांकी लिखे के का उद्देस्य हे ?
6. चन्दू के कारनामा के बारे में विस्तार से बतावऽ ।
7. 'रस्ता बतावे से आगे चले' के अरथ उदाहरन के साथ समझावऽ ।
8. प्रसंग देखावइत नीचे लिखल वाक्य के व्याख्या करल जाय :

   (क) ए चाची, लगलऽ तूहूँ अतत्तह करे ? अपने घर में हमरा मेहमान का बना देवऽ?

   (ख) हँऽ चाची; चन्दू दुस्मन के गोली के छाती से लगाके सबसे बड़का ससुरार के जतरा पर चल देलको।

   (ग) बीर के मिरतु पर लोर बहावे से ओकर आत्मा दुखछऽ हे।

लिफाफा दुरगी के धरावइत) लऽ चाची, ई कुछ नगदी हो। हमनी के रेवाज हे कि कोई अइसन घटना घटऽ हे तो ओकर परिवार ला तुरत कुछ मदद कैल जा हे। हमनी के टुकड़ी के सब फौजी के तरफ से ई सेवा हो।

दुरगी : **(लिफाफा लेइत)** भगवान सब के सुखी रखथिन बेटा!

बहादुर : अच्छा चाची, अब हम चलऽ हियो! कर्नल साहेब के कहेला कुछ समाद.....।

दुरगी : हाँ बेटा, करनल साहेब के कहिअहुन कि उनखनी के अइसन दया आउ मदद से हम बड़ी उबदुब हो गेली हे। भगवान उनका आउ उनकर सब फौजी के सुखी रखथिन। ई पइसा अखनी हमनी के बड़ी भारी सहारा होयत। **(फिर तनि रुक के)** हाँ, आउ.....।

बहादुर : आउ! आउ का ?

दुरगी : करनल साहेब के एक बात आउ कहिअहुन। देखऽ, ई हम्मर छोटका बेटा हो,मन्टू। जब ई तइयार हो जायत तब एकरा अप्पन फौज में भरती कर लेवे के किरपा करतन। पाँच पुस्त से हम्मर परिवार के कोई-न-कोई देस के फौज में सेवा करइत रहल हे, ई सरह चालू रहे।

मन्टू : हँऽ, हम फौज में जाके सैलूट करम **(सैलूट करऽ हे आउ बन्दूक चलावे के नकल करइत)** आउ दुस्मन के टु-टु-टु-टु,-टु-टु-टु मार गिरायम।

सन्टू : हँऽ भइया, आउ करनल साहेब के एहू कहियहुन कि हम तो फौज में भरती न होबइन, बाकि खूब पढ़बइन-लिखबइन आउ विद्यान बन के एगो अइसन दल बनैबइन जेकर उदेस रहत कि जन-जन में हेल-मेल बढ़ावल जाय। एक देस के दोसर देस से दोस्ती होवे। आपस के सब झगड़ा-टंटा मिल बइठ के सल्टावल जाय आउ अइसन जुद्ध के नौबते न आवे जेकरा में निरदोस लोग मारल जाय आउ बेमतलब कोई के अप्पन बाप के सहारा छूट जाय, कोई जननी के माँग के सेनुर मेटा जाय, कोई के भाई छिना जाय.....।

दुरगी : तब ओकर मट्टी के का भेल, बेटा? ओकर मट्टी के का भेल?

बहादुर : जब पौ फटल तब देखल गेल कि दुस्मन के बंकर में लहास छितरायल हे। हमनी आगे बढ़ली तो देखली, चन्दू के देह बुल्लेट से छलनी भेल हे, आउ चन्दू हाथ जोड़ले असमान ताकइत सान्त पड़ल हे, जइसे सरग में बइठल पिताजी से कह रहल होय कि पिताजी, तोर इच्छा पुरा देलियो, अब हम आ रहलियो हे।

दुरगी : **(असमान दन्ने हाथ जोड़इत)** हे भगवान, ओकर अत्मा के अप्पन गोदी में सरन दीहऽ।

बहादुर : चन्दू तो वीरगति पयलन चाची।

दुरगी : हाँ बेटा, उनकर बाबू जी आउ दादाजी, सब के छाती गरब से फूल जायत। **(अप्पन आँख से लोर पोंछइत)** हमहूँ अब लोर न चुआयम। चन्दू के बाबू कहऽ हलन कि बीर के मिरतु पर लोर बहावे से ओकर आत्मा दुखछऽ हे।

(एही घड़ी दुरगी के दुन्नो बेटा, सन्तू आउ मन्तू खेत पर से गोहुम के बोझड़ी लेके आवऽ हथ आउ देवाल दन्ने पटक के गमछी से देह झारइत अचरज के नजर से बहादुर दन्ने देखइत।

दुन्नो : परनाम भइया! ई अचक्के?

दुरगी : हँ-हँ अचक्के ! पहिले जो आउ बहादुर भइया लागी चाह-पानी के इंतजाम कर !

बहादुर : न न चाची ! अभी न ! हमरा तो अभिये लौटे के हे। अब देरी होवत। तुरते पँचबजीवा गड़िया पकड़े के हे !

सन्तू : का भइया, तूँ तो पहिले चौकलेट-मिठाई लेके आवऽ हलऽ, अबरी खालिये हाथे?

मन्तू : **(बहादुर के पैंट के धोकरी टोवइत)** लयले होत्थू कि ! लयले होत्थू कि! लुकौले होत्थू !

बहादुर : अरे न भाई, अबरी कुछ लावे के सुरते न रहलउ। **(एगो बड़गो**

बहादुर : बड़ी बहादुरी से चाची! बड़ी बहादुरी से!! ऊ तो अप्पन जान दे के अप्पन साथी दस फौजी के जान बचा देलको।

दुरगी : कइसे? कइसे? हमरा समझा के बतावऽ बेटा!

बहादुर : अइसन भेलो कि एक दिन रात गिरइते सेमाना के पार से हमनी के चउँकी पर गोलीबारी होवे लगलो। अधरतिया तक दुतरफा गोली चलइत रहलो। संजोग के बात! हमनी के गोली के भंडार खतम होवे पर आ गेलो। आउ पछारी से हमनी के कुमुक पहुँचे में अभी घंटा भर के देरी हलो। एतना देरी में तो हमनी के बन्दूक रुकइत दुस्मन चढ़ बइठतो हल आउ हमनी सब-के-सब मारल जइतियो।

दुरगी : तब फिन का भेलो?

बहादुर : अइसन में चन्दू सुझाव देलको कि जे गोली-हथगोला बचइत हे लेके एक अदमी दुस्मन के मोहरा के पछारे जाय आउ उनके पर बौछार करके उनका सन्त कर देल जाय।

दुरगी : तब फिन कउन गेल ओन्ने?

बहादुर : के जाइत? ऊ तो जिद कर देलको कि जे राह बतावे से आगे चले। से सब कोई मना करइत रहल बाकि ऊ न मानलो। अकेले तीन-चार गो हथगोला आउ कुछ बुल्लेट ले के चउँकी के पछार से निकल गेलो आउ फाँटे-फाँटे चक्कर लगा के दुस्मन के बंकर के पछारी पहुँच गेलो। फिन तो सब के आँख बचा के सब हथगोला ताबड़-तोड़ उनकर बंकर पर फेंक देलको। बंकर में कस के धमाका भेलो आउ ओकरा में आग लग गेलो। दू-तीन गो दुस्मन बहरी भागेला चाहलक, उनका ऊ अप्पन बुल्लेट के निसाना लगा देलको। दुस्मन के बंकर आउ ओकर फौजी सब नेस-नाबूद हो गेलन।

दुरगी : आउ चन्दू? चन्दू के का भेल?

बहादुर : अइसन धमाका में जे इँजोर होयल ओकरा में चन्दू के पछारी दाव लगौले बइठल दुस्मन एकरा देख लेलक। बस, अब का हल, तड़ातड़ बुल्लेट दाग देलक आउ चन्दू उहँइ थउँस गेलन।

[बहादुर झट से उठ के फोटो दन्ने मुँह करके फटाक सिन पल्टनिया सलामी दागऽ हे। फिन बड़ठ के दुरगी के हाथ अप्पन हाथ में लेइत]

बहादुर : चाची, चच्चा तो उमरदराज होके अप्पन सब काम पूरा करके गेलन, अप्पन परिवार के बीच घरनी–बेटन के बीच से उठलन....।

दुरगी : न बेटा, उनका अब बुढ़ारी में जब तकलीफ होवे लगल तो बेर–बेर एही कहऽ हलन कि भले सेमाना पर दुस्मन के मारइत मर जइती तो ई बुढ़ारी के साँसत तो न सहती! बड़का बेटो के बड़ी इयाद करऽ हलन।

बहादुर : चाची, हम तोर बड़के बेटा चन्दू के बारे में बात करे अइली हे।

दुरगी : अरे पगला, ऊ अभी बिआह–उआह न करतऽ। पिछला तुरी छुटी में आयल तो केत्ता मनउली–फुसलउली बाकि ऊ तनिक्को टस–से मस न भेल। कहलक कि हम्मर बियाह तो सेमाना के गोली–बारूद से हो गेलऽ हे। अब हमरा ओकर सउतिन लावे कहऽ हें?

बहादुर : हाँ चाची, सच्चो! सच्चो में ऊ सेमाना के गोली–बारूद से बियाह रचा लेलको हल। आउ हाले.....**(ठमक जा हे।)**

दुरगी : काहे? ठमकले काहे बेटा? काहे? बात का हे?

बहादुर : हाँ चाची, चन्दू दुस्मन के गोली के छाती से लगा के सबसे बड़का ससुरार के जतरा पर चल देलको।

दुरगी : **(कपार ठोकइत)** हे राम ! **(रोवइत)** ई कइसन समाद सुनयले बेटा!

बहादुर : **(समदावइत)** रोवऽ मत चाची। ऊ तो अप्पन बाबू जी के अधूरा सपना के पूरा कर गेलो हे।

[दुरगी कुछ छन अँचरा में आँख लुकौले सिसकऽ हे, फिन एकबएक आँख पोंछइत, ताजा होके बड़ठ जा हे।]

दुरगी : बेटा, ई बतावऽ कि हम्मर चन्दू बहादुर फौजी के मठअत से गेल कि.....।

दुरगी : अरे, हम्मर काम कभी खतम होय के हे। आव, आव !

[अप्पन सुपली बगल के मचिया पर रख के खटिया के सिरहाना में रक्खल दरी-सफेदा बिछावे लगऽ हे।]

बहादुर : ए चाची, तूहूँ लगलऽ अतत्तह करे। अपने घर में हमरा मेहमान का बना देवऽ?

दुरगी : न बेटा, एत्ता दिन पर अयलऽ हे, तऽ मेहमाने न हो गेलऽ।

बहादुर : दुत्त ! ई सब रहे दऽ।

[कहइत ऊ दरी-सफेदा पहिले जइसन समेट के अखरे खटिया के गोरथारी में बइठ जा हे, बाकि दुरगी ओकरा दुन्नो हाथ पकड़ के सिरहाना में समेटल बिछौना पर बइठा के अपने ओरदाई पर बइठ जा हे।]

दुरगी : बेटा, पहिले आवऽ हलऽ तो हँसी-खुसी से किलकइत! अबरी मन मँझान काहे कैले हऽ?

बहादुर : न चाची, अइसहीं। लम्मा जतरा हल न, सेइसे अइसन बुझा होतो।

दुरगी : न न ! (फिन थोड़ा रुक के) ओहो, समझ गेली। चन्दू के बाबू चल गेलन। ई खबर तोरा लग गेल। सेई से मँझान हमरा भिर पोरसिस करे अयलऽ हे। बेटा, सब के एक-न-एक दिन तो जाहीं के हे! उपरे वाला के बोलहटा के टार सकऽ हे ? ऊ तो अप्पन जिनगी के सब करम-धरम पूरा करके चल गेलन। बुढ़ारी से एन्ने कुछ दिन से बेमार रहऽ हलन। एक दिन अचक्के साँस रुक गेलइन। तीन गो बेटन के हमरा जिम्मे छोड़ गेलन!

[कह के सल्ले-सल्ले सिसके लगऽ हे। फिन अँचरा से अप्पन आँख पोछऽ हे।]

बहादुर : चाची, कक्काजी तो पल्टन में अप्पन बहादुरी के अइसन-अइसन कारनामा देखयलन हे कि उनकर कम्पनी के सब लोगिन उनका अबहियो बड़ी आदर से इयाद करऽ हथ। हम इनका सलाम करऽ ही।

ई नाटक 'जुद्ध न होवे' में नाटककार रामनन्दन एगो अइसन सनेस देल चाहऽ हथ, जेकरा से दुनिया में जुद्ध करे के जरूरत न पड़े। सचमुच अगर दुनिया में अइसन हो जाय, तो केतना बढ़िया होयत। देस के सीमा पर लड़ेवला बहादुर सैनिक आउ ओकर परिवार के बीच होयल बातचीत के माध्यम से नाटककार ई सनेस देवे के कोसिस कैलन हे। ई नाटक पढ़ला पर पाठक के सरीर में जोस भर जाहे। नाटक के रचना तो रंगमंच पर खेलेला ही कैल जाहे। एही से ई नाटक के रंगमंच पर खेले से दरसक में भी जोस जगावल जा सकऽ हे।

जुद्ध न होवे

खेलताहर

1. दुरगी : एगो पल्टनिया के घरनी (60 बरीस)
2. सन्तू : दुरगी के मँझिला बेटा (18 बरीस)
3. मन्तू : दुरगी के छोटका बेटा (14 बरीस)
4. बहादुर : दुरगी के गाँव के पल्टनिया।

[घर के ड्योढ़ी में दुरगी एगो खटिया पर बइठल सुपली में चाउर फटकइत-बीछइत। सामने देवाल पर दुरगी के पति के फोटो टँगल हे, जेकरा पर फूल के माला पेन्हावल हे। माला के ताजा फूल से बुझा जा हे कि हाले में ओकर पति के इंतकाल भेल हे।

सामने से बहादुर (25-26 साल के गबरू जुआन, फौजी लेवास में) पाँव दाबले सल्ले-सल्ले भीरी आवऽ हे आउ खटिया से तनि दूरे खाड़ हो जा हे। एकटक दुरगी के अप्पन काम में मसगूल निहारइत रहऽ हे। कुछ छन के बाद, ओकर धेयान न टूटइत देख के बहादुर टोकऽ हे]

बहादुर : **(मसुआयल सुर में)** दुरगी चाची!

दुरगी : **(चउँकइत)** अरे बेटा, बहादुर! उहाँ काहे खाड़ हें? आव, आव, आव! कखनी से खाड़ हें, चुप्पेचाप?

बहादुर : परनाम चाची! अबकही तो आवइते ही, तोरा मसगूल देख के सोचली कि तूँ अप्पन काम निपटा लऽ, तऽ हम बोली।